ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 21 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 फरवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 फा.कृ.-12

गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना का वार्षिक महोत्सव मेले के रूप में सम्पन्न

नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों के बिना वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधूरी है

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल वैदिक संस्कृति के आधार हैं

– स्वामी धर्मानन्द

संध्या एवं यज्ञ के बिना मानव जीवन निरर्थक है

– डॉ. सोमदेव शास्त्री

प्राचीन भारतीय विद्या सभा द्वारा संचालित गुरुकुल आश्रम आमसेना का 51वाँ एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना का 38वाँ वार्षिक महोत्सव 16 से 18 फरवरी, 2019 को एक धार्मिक मेले के रूप में भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर स्व. श्री शीशराम आर्य की पुण्य स्मृति में 7 से 18 फरवरी तक सामवेद पारायण महायज्ञ प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ। यज्ञ में गुरुकुल के ब्रह्मचारी तथा कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा सस्वर वेदपाठ किया गया। यज्ञ का संयोजन नैष्ठिक ब्रह्मचारी मनुदेव वाग्मी ने किया तथा व्यवस्था का कार्य पं. विशिकेशन शास्त्री ने संभाला। महोत्सव का उद्घाटन 16 फरवरी को प्रातः 10 बजे ध्वजारोहण के साथ हुआ। ध्वजारोहण श्री वीरसेन सिन्धु के सुपुत्र श्री सौरभ सिन्धु एवं सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य विद्वान्, महानुभाव उपस्थित थे। ध्वजारोहण के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने संक्षिप्त उद्बोधन देते हुए ओ३म् ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस संसार के रचयिता परमपिता परमात्मा का निज नाम ओ३म् है। अतः उस ओ३म् की छत्रछाया में ही सभी प्राणी सुख–शांति प्राप्त कर सकते हैं। ओ३म् ध्वज संसार के समस्त प्राणियों को एक ईश्वर की कृति के रूप में देखता है और पूरी पृथ्वी पर रहने वाले मनुष्यों एवं पशु–पक्षियों आदि को एक परिवार मानते हुए सभी को एक ईश्वर को मानने की प्रेरणा देता है। स्वामी जी ने इसी भावना से जीवन में सबको पक्षपात रहित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। ध्वजारोहण के पश्चात् उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ जिसका संयोजन गुरुकुल के उपाचार्य डॉ. कुंजदेव मनीषी ने किया। सर्वप्रथम स्वामी व्रतानन्द जी महाराज ने स्वागत भाषण के द्वारा आगन्तुक विद्वानों एवं अतिथियों का अभिनन्दन किया तथा गुरुकुल के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये।

सतना मध्य प्रदेश से पधारे हुए आर्य भजनोपदेशक श्री नन्द कुमार एवं नागपुर से पधारे आर्य भजनोपदेशक पं. सुरेन्द्रपाल आर्य के मधुर भजनों के उपरान्त गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने मुख्य उद्बोधन में उपस्थित आर्यजनता को वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराया। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली बच्चे का सर्वांगीण विकास करती है, उसे शिक्षित करने के साथ–साथ संस्कारित भी करती है। संस्कृत भाषा का गहरा ज्ञान प्राप्त करके गुरुकुल के विद्यार्थी वेद–वेदांग के विद्वान् बन जाते हैं तथा प्रातः और सायं संध्या यज्ञ आदि के द्वारा आध्यात्मिक

शेष पृष्ठ 8 पर

देश की सुरक्षा और अखण्डता से खिलवाड़ कर रहे लोगों को करारा जवाब दिया जाये

– स्वामी आर्यवेश

14 फरवरी, 2019 को जम्मू कश्मीर के पुलवामा में आतंकवादियों ने अत्यन्त वीभत्स काण्ड करके सी.आर.पी.एफ. के 44 जवानों को शहीद कर दिया। यह घटना अत्यन्त कायराना और सारे देश को आक्रोश में डुबोने वाली है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने इस अमानवीय घटना पर रोष एवं क्षोभ व्यक्त करते हुए सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से शहीद जवानों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए अपील की कि देश की अखण्डता और देश के सुरक्षा को हानि पहुँचाने वाले असामाजिक तत्वों से कड़ाई से निपटा जाये।

स्वामी जी ने कहा कि इस प्रकार के काण्ड करने वाले आतंकवादियों को देश की जनता अपनी एकता का परिचय देते हुए उनको मुंहतोड़ जवाब दे। अब समय आ गया है कि देशवासियों को स्वयं यह विचार करना होगा कि आतंकवादी एवं राष्ट्र विरोधी शक्तियों को पहचाना जाये तथा उन्हें समाज में किसी भी रूप में संरक्षण न मिले, ऐसी स्थिति उत्पन्न करनी चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि सरकार और देश की जनता किसी भी कीमत पर आतंक की आड़ में देश की सुरक्षा और अखण्डता से खिलवाड़ कर रहे लोगों को करारा जवाब दे तथा सतर्क रहे। स्वामी जी ने शहीदों के परिवारों को केन्द्र सरकार की ओर से विशेष सम्मान एवं सहायता देने की माँग की तथा कहा कि ऐसे परिवारों को स्थाई राष्ट्रीय दर्जा देकर सम्मानित किया जाना चाहिए।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

27 फरवरी बलिदान दिवस पर विशेष

अग्निशलाका पुरुष – चन्द्रशेखर आजाद

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व 556 देशी रियासतों में से गुजरात से सटे हुए क्षेत्र में अलीराजपुर नामक (सम्प्रति मध्य प्रदेश) रियासत के झाबुआ जिले में एक छोटा सा ग्राम था 'भाबरा'। इसी गाँव में पं. सीताराम जी तिवारी तथा जगरानी देवी, साधारण सा कान्य कुब्ज ब्राह्मण परिवार निवास करता था। इनके ही निकट अग्निहोत्री जी का परिवार कृषि आदि कार्य कर निर्वाह करता था। इन्हीं पं. सीताराम जी तिवारी के यहाँ 23 जुलाई, 1906 को एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। शैव परिवार की मान्यताओं के अनुसार इस बालक का नाम 'चन्द्रशेखर' रखा गया। 5 वर्ष की आयु के पश्चात् स्थानीय पाठशाला में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण परिवार के सात्विक संस्कारों के कारण इस बालक में 'संस्कृत' पढ़ने की तीव्र इच्छा हुई। बालक चन्द्रशेखर ने अपनी यह इच्छा पिताश्री से कही। किन्तु पारिवारिक स्थिति के कारण पिता जी ने उन्हें काशी भेजने में अपनी असमर्थता प्रकट की। किन्तु दृढ़ निश्चयी बालक एक दिन चुपचाप घर से निकलकर काशी पहुँच गया। वहाँ एक गुरुवास में रहकर वे संस्कृत का अध्ययन रुचिपूर्वक करने लगे।

इधर नियति कुछ और ही निश्चय किए बैठी थी। गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' छेड़ दिया था। यह 15 वर्षीय बालक इस आंधी की चपेट से दूर कैसे रह सकता था?काशी में छिड़े आन्दोलन ने इस किशोर बालक चन्द्रशेखर ने पुलिस के क्रूर व्यवहार से नाराज होकर एक पत्थर से पुलिसकर्मी को घायल कर दिया। पुलिसकर्मी गण इस युवक को पहले तो पकड़ नहीं सके, किन्तु मस्तक पर लगे चन्दन के टीके के कारण ये पहचान में आ गए। उन्हें पकड़कर तत्काल मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। युवक चन्द्रशेखर से मजिस्ट्रेट ने पूछा –

तुम्हारा क्या नाम है?युवक ने अपना नाम 'आजाद' बताया।

तुम्हारे पिता का नाम?'स्वतन्त्र'

तुम्हारे घर का पता?मेरा घर 'जेलखाना' है।

बालक के इन उत्तरों को मजिस्ट्रेट को प्रथमतः आश्चर्य हुआ। उसने तत्काल चन्द्रशेखर को 15 बेतों की सज़ा सुनाई। प्रामाणिक रूप से बताया जाता है कि जब युवक चन्द्रशेखर के खुले बदन पर पानी में भीगी बेंत पड़ती थी, तब प्रत्येक बेंत की मार पर वे जोर से नारे लगाते थे – इन्कलाब जिन्दाबाद, महात्मा गांधी की जय। यह देखकर पुलिसकर्मी भी बेंत मारते हुए थोड़ा ठिठक जाते थे। वहाँ से छूटकर इस युवक चन्द्रशेखर ने प्रतिज्ञा की कि –

दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे।

आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।।

इधर कतिपय हिंसक घटनाओं के कारण गांधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' एकाएक बन्द कर दिया। इससे युवा आन्दोलनकारियों को बहुत ठेस पहुँची। युवक चन्द्रशेखर के हृदय में अंग्रेजों के विरूद्ध आग भड़क रही थी। संयोगवश उनकी भेंट एक महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल से काशी में हो गई। आजाद तत्काल क्रान्तिकारी दल में जो कि अहिंसा में तनिक भी विश्वास नहीं करता था, सम्मिलित हो गए। इस दल को वे सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में जाल के समान फैला देना चाहते थे। किन्तु इस कार्य में एक बड़ी बाधा आ रही थी। हमारे शास्त्रों में ठीक ही कहा है – अर्थ के बिना सब व्यर्थ है। क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र–शस्त्रों को उपलब्ध करवाने के लिए धन की बहुत आवश्यकता थी। कहते हैं, एकबार चन्द्रशेखर ने बैंक लूटने का प्रयास किया किन्तु असफल रहे उन्होंने काशी में एक क्रान्तिकारी पर्चा तैयार कर उसे अनेक स्थानों पर वितरित करा दिया। यह काम उन्होंने बहुत चतुराई से किया था। किन्तु यह पर्चा किसी तरह पुलिस दफ्तर तक पहुँच गया था।

परमात्मा की कृपा से इन अलौकिक महापुरुषों में कुछ न कुछ अलौकिक गुण उत्पन्न हो जाते हैं। हमारे चरित् नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' गोली चलाने में सिद्धहस्त थे। अपने मित्रों के अनुरोध पर उन्होंने पेड़ की टहनी के एक बड़े पत्ते में पाँच अलग–अलग छेद पिस्तौल की गोली से कर दिए थे। उनका निशाना अचूक होता था। आजाद को अपने क्रान्तिकारी साथियों के खाने–पीने की हमेशा चिन्ता बनी रहती थी। इधर भाबरा (अलीराजपुर–झाबुआ) में उनके माता–पिता बहुत ही विपन्न अवस्था में दिन व्यतीत कर रहे थे। श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी को जब इस बात का पता चला, तब उन्होंने कुछ रुपये आजाद को उनके माता–पिता को भेजने के लिए दिए। किन्तु अब तो आजाद का परिवार तो सम्पूर्ण राष्ट्र बन चुका था और क्रान्तिकारी लोग इस राष्ट्र–परिवार के निकटतम सम्बन्धी बन चुके थे। आजाद जी वह रकम क्रान्तिकारियों के लिए पिस्तौल आदि खरीदने पर खर्च कर दिए। आजाद को अपने माता–पिता से पहले भारत को स्वतन्त्र कराने वाले भारत माता पर मर मिटने वाले भारत–माँ के पुत्रों की अधिक चिन्ता थी। उन्होंने यह राशि 'राष्ट्र देवो भवः कहकर' 'इदमं न मम्' के भाव के अनुसार क्रान्तिकारियों पर न्यौछावर कर दी। यह महान त्याग था, उस महान कर्मयोगी चन्द्रशेखर आजाद का।

रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ अन्य क्रान्तिकारियों के सहयोग से 9 अगस्त, 1925 को सरकारी खजाना लूटने के योजना बनाई गई। काकोरी रेलवे स्टेशन (उ. प्र.) में रेल रोककर सरकारी खजाना पिस्तौल के बल पर लूट लिया गया। अंग्रेजों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। काकोरी ट्रेन लूट–काण्ड में अनेक क्रान्तिकारी पकड़े गये। परिणामतः रामप्रसाद जी 'बिस्मिल' तथा अशफाक उल्ला खाँ को फांसी की सज़ा सुना दी गई। किन्तु सौभाग्य से चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस न पकड़ सकी। इस भयंकर काण्ड एवं परिणाम के कारण क्रान्तिकारी दल छिन्न–भिन्न हो गया।

इतने पर भी चन्द्रशेखर आजाद तनिक भी निराश नहीं हुए वे महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष वीर विनायक दामोदर सावरकर के निकट उचित परामर्श लेने गए। वीर सावरकर ने उन्हें ढाढस बंधाया तथा क्रान्तिकारी दल को पुनर्गठित करने का परामर्श

दिया। वे अब पुनः संगठन में जुट गए। प्रसंगवशात् झांसी में उनकी भेंट भगतसिंह तथा राजगुरु से हुई। इतना ही नहीं, कुछ समय पश्चात् उनसे बटेश्वर दत्त और अन्य अनेक क्रान्तिकारी आ मिले। इस बार उन्होंने नये दल का नाम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा। इसके पुनर्गठन की पृष्ठभूमि में वीर सावरकर की ही प्रेरणा कार्य कर रही थी।

अक्टूबर, 1928 में साइमन कमीशन भारत आया इस कमीशन के सारे सदस्य अंग्रेज ही थे, इसमें एक भी भारतीय को नहीं रखा गया था। यह भारत का बड़ा भारी अपमान था। यह कमीशन बम्बई के पश्चात् जब लाहौर आया, तब रेलवे स्टेशन पर ही इसका विरोध करने के लिए शेरे पंजाब, लाला लाजपतराय गए। अंग्रेज पुलिस ने लालाजी पर प्राणघातक आक्रमण किया। लाठी की गम्भीर चोटों के कारण लालाजी की मृत्यु हो गई। विरोध कर रहे जुलूस में भगतसिंह और राजगुरु भी थे। उन्होंने यह काण्ड स्वयं अपनी आँखों से देखा था।

भगतसिंह तथा राजगुरु ने यहाँ यह व्रत लिया कि लालाजी के हत्यारे पुलिस कप्तान सैडर्स से बदला नहीं ले लेंगे, तब तक चैन नहीं लेंगे। बस फिर क्या था, योजनानुसार इन दोनों वीरों ने 'खून का बदला' खून से लिया। भगतसिंह को पकड़ने के लिए पुलिस ने बड़ा प्रयत्न किया, किन्तु उसे निराशा हाथ लगी। भगतसिंह वेश बदलकर कलकत्ते चले गए। आजाद साधु के वेश में 'अलख निरंजन' का नाद करते हुए लाहौर से गायब हो गए।

9 अप्रैल, 1929 ई. को असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' प्रस्तुत होने वाला था। जिसके अनुसार भारतीय मजदूरों की हड़तालों पर स्थाई रोक लगाना था। इस अत्याचारी दमनात्मक बिल का विरोध करने के लिए भगतसिंह और बटेश्वर दत्त दिल्ली जा पहुँचे। यद्यपि इसमें आजाद भी सम्मिलित होना चाहते थे, किन्तु नीति के अनुसार इन्हें अलग रखकर संगठन कार्य करने के लिए कहा गया। इन दोनों वीरों ने असेम्बली की दर्शकदीर्घा से अंग्रेजों की दमननीति का भण्डा फोड़ने वाले पर्चे फेंके तथा खाली बेंचों पर बम फेंके। ये लोग असेम्बली से बाहर ही भागते हुए पकड़ लिए गए। इसके बाद राजगुरु, सुखदेव तथा यशपाल भी गिरफ्तार कर लिए गए। चन्द्रशेखर आजाद पुलिस की गिरफ्त से बाहर ही रहे। इधर भगवती चरण वर्मा की बम फटने से अकाल मृत्यु हो गई थी। इन क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चला, अन्त में भगत सिंह सुखदेव तथा राजगुरु को 23 मार्च, 1937 को फांसी दे दी गई। लार्ड डरविन ने गांधी जी को इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें आजीवन कारावास कर देने के लिए कहा था। किन्तु गांधी जी ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया। लार्ड डरविन भी गांधी जी की इस कठोरता पर तथा गजब की अहिंसा पर घृणा से उनकी ओर देख रहा था। उसका मत था कि यदि गांधी जी इसमें हस्तक्षेप करते तो इन वीरों को फांसी पर लटकने से बचाया जा सकता था। इतना ही नहीं गांधी जी ने कांग्रेस का अधिवेशन जानबूझकर 22 मार्च को ही समाप्त करवा दिया था, ताकि कांग्रेस में विद्रोह न हो। इस दुखद घटना के पश्चात् क्रान्तिकारी दल पुनः छिन्न–भिन्न हो गया।

दल का धन व्यापारी के यहाँ रखा गया था। उस धन को लेने हेतु वे इलाहाबाद गए। ऐसे समय में उनके ही निकट के सहयोगी की देश द्रोहिता के कारण आजाद जी संकट में फंस गए। बिसेसर नामक इस देश द्रोही ने पुलिस का मुखबिर बन कर नाट बाबर जो कि वहां का पुलिस अधीक्षक था, को सूचना दे दी कि आज 'अल्फ्रेड पार्क' में आजाद अपने मित्र के साथ वहाँ मिलेंगे। बस, सूचना मिलते ही नॉट बाबर अपने दल–बल के साथ अल्फ्रेड पार्क (सम्प्रति चन्द्रशेखर आजाद पार्क) पहुँच गया। आजाद जी को इस विश्वासघात की भनक लग गई और उन्होंने फुर्ती से अपने सहयोगी को पार्क से बाहर खिसक जाने के लिए कहा। वह वहां से चला गया। वे अब अकेले ही पुलिस का मुकाबला करने के लिए तैयार हो गए। फिर क्या था ..... धांय–धांय कर दोनों ओर से गोलियां चलने लगीं। आजाद ने अपनी अचूक निशानेबाजी से अनेक पुलिस वालों को ढेर कर लिया। इधर उन्होंने भी एक वट वृक्ष की आड़ ले ली। फिर भी उन्हें चार गोलियां लग गई। पुलिस उन्हें जीवित पकड़ना चाहती थी। उन्होंने प्रतिज्ञा कर रखी थी कि वे जिन्दा रहते हुए पुलिस की पकड़ में नहीं आयेंगे। जब उनकी पिस्तौल में अन्तिम गोली रह गई, तब उन्होंने उस अन्तिम गोली अपनी कनपटी में मार ली। यह दुर्भाग्यपूर्ण दिवस 27 फरवरी, 1931 का प्रातः साढ़े दस बजे का था। अंग्रेज आजाद से इतने डरे हुए थे कि उन्हें पूरा मरा हुआ जानने के लिए उनके मृत शरीर पर गोली मारी। जब मृत शरीर में हलचल न हुई तब पुलिस उनके शव के पास जाने का साहस जुटा पाई।

जिस वटवृक्ष के नीचे आजाद का यह महान् बलिदान हुआ था उसे आज भी वहां की महिलाएँ हल्दी कंकू तथा सूत के धागे लपेट कर उसकी पूजा प्रतिवर्ष करती हैं। इन पंक्तियों के लेखक को भी उस वट वृक्ष के नीचे पड़ी धूल को सिर पर रख कर उस महान वीर को प्रणाम करने का दो बार स्वर्ण अवसर मिल चुका है।। इस प्रकार चन्द्रशेखर आजाद इस देश के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। उन्हें बारम्बार प्रणाम।

वैदिक नित्य कर्म विधि

– लेखक आचार्य श्री पं. हरिदेव आर्य एम.ए.

इस पुस्तक में प्रातःकाल के मन्त्र, संन्ध्या, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना मंत्र, दैनिक यज्ञ, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, विशेष यज्ञ और विशेष आहुतियाँ, अमावस्या, पूर्णिमा आदि के विशेष मन्त्र, ईश्वर प्रार्थना, पचास भजन संग्रह आदि के अतिरिक्त जन्मदिन, वर्षगांठ, सगाई, गोद भरना, वर तथा बारात का स्वागत, व्यापार का शुभारम्भ, भवन शिलान्यास, क्रिया सम्बन्धी (उठाला), यात्रा–गमन, शुद्धि संस्कार पद्धति, यजुर्वेद के 40वें अध्याय से युक्त सभी आर्यों के पर्वों के मन्त्र आर्य पर्व पद्धति भी सम्मिलित है। **विशेष बात यह है कि सब मन्त्र मोटे और लाल, सभी मन्त्र अर्थ सहित और कविता पाठ में भी और प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओ३म् भी मुद्रित है।** 23x36 का बड़ा साईज, आकर्षक टाईटिल तथा पृष्ठ संख्या 176, संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण मूल्य एक प्रति 175 रुपये डाक व्यय अलग होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस तथा बोधोत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनायें

महर्षि के स्वप्न को साकार करने के लिए सामाजिक सुधार, मानव निर्माण तथा वेद प्रचार हेतु संकल्प लें आर्यजन

– स्वामी आर्यवेश

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने वेदों का अनुशीलन किया और उन्हीं के अनुसार समाज के सर्वांगीण परिष्कार का निश्चय किया। महर्षि ने सामाजिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, धार्मिक इन सभी विषयों पर प्रकाश डालकर उसको सही दिशा प्रदान करने का भागीरथ प्रयास किया था। उन्होंने अवतार वाद, जन्म पत्र, श्राद्ध इत्यादि का तर्कपूर्ण विरोध करते हुए, समाज को जगाने का कार्य किया। भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से और उसके वर्चस्व को स्थापित करने के लिए, अन्ध विश्वासों, कुसंस्कारों, कुरीतियों, जड़ताओं पर प्रहार किया। आज देश पुनः धार्मिक पाखण्ड भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता, जातपात, नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, शोषण सहित अनेकों कुरीतियों से जकड़ा हुआ है। समय की पुकार है कि समाज में अत्यन्त गहराई तक व्याप्त अन्ध विश्वासों को जड़ से उखाड़ फेंका जाये और महर्षि का अन्धविश्वास कुसंस्कारों, कुरीतियों को दूर करने का सन्देश घर-घर पहुँचाया जाये।

नव-जागरण के पुरोधा, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस इस वर्ष फाल्गुन बदी दशमी विक्रमी सम्वत् 2075 तदनुसार 1 मार्च, 2019 दिन शुक्रवार तथा ऋषि बोधोत्सव 4 मार्च, 2019 सोमवार को पड़ रहा है अतः इन पावन पर्वों को अत्यन्त धूम धाम से समारोह पूर्वक अपने-अपने क्षेत्र में मनाएँ।

हमारा जीवन आज यदि समाज के अन्य लोगों की अपेक्षा श्रेष्ठ है तो वह केवल स्वामी दयानन्द जी के उच्च विचारों के मार्ग दर्शन के ही कारण है। स्वामी जी ने यह ज्ञान हम तक पहुँचाया है इसके लिए हम सब सदैव उनके ऋणी रहेंगे। इस ऋण को उतारने का एक ही उपाय है कि हम आजीवन उस महान ऋषि के विचारों को अधिकाधिक जनता तक पहुँचाकर अन्य बन्धुओं को भी सन्मार्ग पर लाने के लिए प्रयासरत रहें। हमारा एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए कि अधिक से अधिक लोगों और अन्ततः समूचे विश्व को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाना।

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस एवं ऋषि बोधोत्सव के पर्वो के अवसर पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें और यह आयोजन आर्य समाज से बाहर निकल कर जैसे पार्कों अथवा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर किये जायें तो अत्योत्तम रहेगा। इन बृहद यज्ञों में आर्य सदस्यों, परिवारों के अतिरिक्त जन सामान्य को भी प्रेम पूर्वक आमन्त्रित किया जाना चाहिए। यज्ञोपरान्त ऋषि लंगर, जलपान, प्रसाद आदि का वितरण भी अधिक से अधिक लोगों में करें।

यज्ञ के दौरान तथा बाद में आर्य उपदेशकों तथा स्वाध्यायशील विद्वान आर्य महानुभावों के प्रवचन अवश्य आयोजित करें जिससे जन साधारण को वैदिक, आध्यात्मिक तथा श्रेष्ठ विचारों के द्वारा सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके। अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्गदर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियों या लघु सम्मेलनों अथवा कार्यशालाओं को आयोजित करें।

इस अवसर पर महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर सत्यार्थ प्रकाश कथा का आयोजन भी प्रेरणास्पद हो सकता है। इस कथा से सत्यार्थ प्रकाश जैसे अनुपम ग्रन्थ के विचारों का लाभ लोगों को धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सकता है।

अत्यन्त आवश्यक है कि महर्षि जन्म दिवस से लेकर ऋषि बोधोत्सव तक आर्य समाज भवनों पर विशेष रोशनी का प्रबन्ध किया जाये तथा प्रत्येक आर्य अपने-अपने घरों को भी दीपावली की तरह से सजायें। प्रत्येक आर्य की छत पर ओ३म् ध्वज अवश्य ही लगा होना चाहिए।

1 मार्च से 4 मार्च तक प्रत्येक आर्य समाज से प्रभात फेरी निकाली जानी चाहिए जिसमें आर्यजन परिवार सहित भारी संख्या में प्रातः काल महर्षि तथा प्रभु भक्ति के गीत गाते हुए निकलें, हाथों में ओ३म् ध्वज लिए हुए भजन गाते हुए, जन समूह अवश्य ही आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। इस अवसर पर महर्षि तथा आर्य समाज से सम्बन्धित लघु साहित्य भी वितरित किया जा सकता है।

अपने-अपने आर्य समाज मंदिरों में या सार्वजनिक स्थानों पर भाषण या चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित करके समस्त प्रतियोगी बच्चों को पुरस्कार स्वरूप महर्षि जीवन चरित्र या सत्यार्थ प्रकाश पुरस्कार स्वरूप वितरित करें। आर्य शिक्षण संस्थाओं को इस प्रकार के आयोजन अपने-अपने विद्यालय के बच्चों के मध्य अवश्य ही आयोजित करने चाहिए।

क्षेत्रीय जनता को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य, स्वामी दयानन्द के चित्रों सहित कलेण्डर आदि भी स्थानीय जनता में निःशुल्क वितरित करें।

इस अवसर पर आर्य समाज के सभी सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारी आर्य समाज की गतिविधियाँ सन्तोषजनक है? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है?

महर्षि जन्मोत्सव के अवसर पर अपने-अपने क्षेत्र के प्रतिष्ठित नागरिकों, राजनीतिक तथा धार्मिक नेताओं तथा अपने समाज के सदस्यों को शुभ कामना सन्देश भी भेजें तथा पोस्टर भी दीवारों पर चिपकवाएँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तत्कालीन समस्याओं के निवारण के साथ-साथ उस समय व्याप्त धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाई थी। मेरा आप सब आर्यों से निवेदन है कि महर्षि जन्मोत्सव और बोधोत्सव के प्रत्येक कार्यक्रम में चाहे वह यज्ञ हो, चाहे जन जागृति यात्रा हो, चाहे व्याख्यान हो, चाहे कार्यशालाएं हो प्रत्येक स्थान पर धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध आवाज उठाई जाए। आर्य समाज को धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध पुरजोर आवाज उठाते हुए एकजुट होकर इस लड़ाई को लड़ना है। आर्य समाज ही इस सामाजिक बुराई से जनता जनार्दन को त्राण दिला सकता है। महर्षि जन्मोत्सव पर होने वाले विशेष यज्ञों में धार्मिक पाखण्ड के विरूद्ध एक आहुति आप सब अवश्य डालें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के इतने उपकार हम सबके ऊपर हैं जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। सबसे अमूल्य उपकार वेदों के प्रति जागृति, वेद प्रचार व वेद मार्ग का रास्ता बताना है, क्योंकि वेद मार्ग पर चलकर हम सब कुछ श्रेष्ठ बना सकते हैं। आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है। अतः वेदमय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो।

- प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

21 से 27 फरवरी, 2019 वैदिक सार्वदेशिक 5

आर्य राष्ट्र बनायेंगे

स्वामी दयानन्द सरस्वती

संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ

स्वामी इन्द्रवेश

।। ओ३म् ।।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अरावणः।।

आर्य समाज के सशक्त युवा संगठन

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं लोकप्रिय पत्रिका 'राजधर्म'

की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

आप सादर सपरिवार आमंत्रित हैं। अधिक से अधिक युवाओं (युवक, युवतियों) को आर्य समाज से जोड़ने के लिए समारोह में लेकर आयें!

उद्बोधन	:	स्वामी अग्निवेश जी
मुख्य अतिथि	:	चौ. हरिसिंह सैनी, पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार
विशिष्ट अतिथि	:	प्रो. विट्ठलराव आर्य, महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
	:	ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष राष्ट्र निर्माण पार्टी
	:	श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
	:	डॉ. यशदेव शास्त्री जी, पतंजलि योग पीठ, हरिद्वार
	:	डॉ. धीरज सिंह जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश
ध्वजारोहण	:	पं. माया प्रकाश त्यागी जी, कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा
मुख्य यजमान	:	श्री अरविन्द मेहता एवं श्रीमती मधुर भाषिणी मेहता
	:	श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री
	:	श्री सुनील देशवाल एवं श्रीमती श्वेता देशवाल
	:	डॉ. रणवीर खासा एवं श्रीमती सुनीता आर्या
स्वागताध्यक्ष	:	वैद्य सत्यप्रकाश आर्य, संस्थापक, नाड़ी वैद्य कायाकल्प
भजनोपदेशक	:	सर्वश्री सहदेव बेधड़क, कैलाश कर्मठ, रामनिवास आर्य, नरदेव बेनीवाल, कल्याणी आर्या
संयोजक स्वागत समिति	:	ठेकेदार महावीर सिंह कुण्डू, श्री रामचन्द्र ठेकेदार

आशीर्वाद एवं सान्निध्य :- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी (मेरठ), स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी (उड़ीसा), स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी (धीरणवास), स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी (दिल्ली), स्वामी सुमेधानन्द जी सांसद सीकर (राजस्थान), स्वामी सुधानन्द सरस्वती जी (राजस्थान), स्वामी चन्द्रवेश जी (गाजियाबाद), स्वामी रामवेश जी (जीन्द), स्वामी ओमवेश जी (बिजनौर), स्वामी यतीश्वरानन्द जी विधायक (हरिद्वार), स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी पूठ (उ. प्र.), स्वामी आनन्दवेश जी (शुक्रताल), स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ़), स्वामी ब्रतानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी सोम्यानन्द जी (मथुरा), स्वामी शान्तानन्द जी (अलीगढ़), स्वामी विश्वानन्द जी (मथुरा), स्वामी योगानन्द जी (आगरा), स्वामी सम्पूर्णानन्द जी (मथुरा), स्वामी करुणानन्द जी (साहबाद), स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुनानगर), स्वामी वेद प्रकाश जी (हिमाचल प्रदेश), स्वामी निर्भयानन्द जी (हाथरस), स्वामी प्रकाशानन्द जी (मथुरा), स्वामी निर्भयानन्द जी (म. प्र.), स्वामी सवितानन्द जी (रांची), स्वामी सोमवेश जी (उड़ीसा), स्वामी विशुद्धानन्द जी (उड़ीसा), स्वामी देवेश्वरानन्द जी (मेरठ), स्वामी सूर्यवेश जी (बिजनौर), स्वामी अखिलानन्द जी (पूठ), स्वामी महानन्द जी (बुलन्दशहर), स्वामी महानन्द जी (शुक्रताल), स्वामी ब्रह्मानन्द जी (बरेली)।

आमन्त्रित विद्वान एवं नेता :- डॉ. वेद प्रताप वैदिक (दिल्ली), आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई), प्रो. वीरेन्द्र (रोहतक), श्री प्रेमपाल शास्त्री (दिल्ली), श्रीमती मनीषा पंवार (विधायक जोधपुर), श्री देवेन्द्र पाल वर्मा (मुजफ्फरनगर), श्री अनिल आर्य (अध्यक्ष के.आ.यु.परिषद्), श्री राम सिंह आर्य (उपमंत्री सार्वदेशिक सभा), श्री विशाल मलिक (गुरुग्राम), श्री आर.एस. तोमर एडवोकेट (दिल्ली), श्री मधुर प्रकाश (उपमंत्री, सार्वदेशिक सभा), श्री अश्विनी शर्मा एडवोकेट (जालन्धर), श्री गोविन्द सिंह भण्डारी (बागेश्वर), श्री लाजपत राय चौधरी (करनाल), पं. रघुवीर सिंह आर्य (शामली), प्रो. बलजीत सिंह आर्य (बड़ौत), डॉ. लक्ष्मादास आर्य (म. प्र.), श्री धर्मपाल एडवोकेट (चिड़ावा), श्री मानपाल सिंह राठी (उत्तराखण्ड), श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव (खण्डवा, म. प्र.), श्री श्रीराम आर्य (कोलकाता), श्री रामेन्द्र गुप्ता (पटना, बिहार), श्री प्रेम प्रकाश आर्य (रांची), श्री राममोहन राय एडवोकेट (पानीपत), डॉ. प्रकाशवीर विद्यालंकार (रोहतक), श्री अजीत सिंह एडवोकेट (पूर्व विधायक, झज्जर), श्री इन्द्रजीत आर्य (नरवाना), प्रिं. सदाविजय आर्य (महाराष्ट्र), श्री हवा सिंह आर्य (चांद गोठी), श्री राजसिंह आर्य (रोहतक), श्री जगदीश सर्राफ (भिवानी), श्री दलपत सिंह आर्य (जालौर), चौ. जयसिंह ठेकेदार (गोहाना), श्री धर्मवीर आर्य (बरवाला), श्री सत्यपाल (हिसार), श्री इन्दर सिंह आर्य (पूर्व एस.डी.एम. भिवानी), डॉ. भूप सिंह आर्य (भिवानी)।

निवेदक :- स्वामी आर्यवेश (प्रधान), बिरजानन्द एडवोकेट (महामंत्री), स्वामी विजयवेश (व्यायामाचार्य), आचार्य हरपाल शास्त्री (व्यायामाचार्य), स्वामी श्रद्धानन्द (उपप्रधान), स्वामी नित्यानन्द (उपमंत्री), ओम प्रकाश आर्य (पंजाब), बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा), रामानन्द आर्य (बिहार), डॉ. वीरेन्द्र पंवार (उत्तराखण्ड), ब्र. रामफल आर्य (उ. प्र.), कमल आर्य (म. प्र.), धर्मेन्द्र आर्य (दिल्ली), चतर सिंह सूर्यवंशी (हिमाचल प्रदेश), अजय अमर चौरसिया (विदर्भ), स्वामी सम्यक क्रांतिवेश (महाराष्ट्र), यशपाल 'यश' (राजस्थान), सुधीर कुमार शास्त्री (उड़ीसा), पूर्ण चन्द्र आर्य (झारखण्ड), डॉ. कमल नारायण आर्य (छत्तीसगढ़), चन्द्रभान आर्य (अमेरिका), अनेस रामक्लाश (दक्षिण अफ्रीका), यशपाल अंगिरा (केनिया), नरेदव यजुर्वेदी (हालैण्ड), राम प्रहलाद शर्मा (जर्मनी), सुभाष शास्त्री (बांग्लादेश), स्वामी कमलानन्द (चैकोस्लोवाकिया), प्रिं. आजाद सिंह (उपमंत्री), बृजेन्द्र मोहन भण्डारी (उपमंत्री), धर्मवीर आर्य (बहरोड़, उपमंत्री), चौ. जय प्रकाश आर्य (सोहटी, उपप्रधान), रामनिवास आर्य (नारनौल, उपप्रधान), सन्तराम आर्य (उपप्रधान), विश्वबन्धु शास्त्री (आहूलाना), डॉ. शीशराम आर्य (उपमंत्री), बलजीत सिंह आदित्य (दिल्ली), विजय कुमार चौधरी (दिल्ली), आचार्य यशोवर्धन (मेरठ), रामपाल शास्त्री (सुरहेती), वैद्य शिरोमणि आर्य (म. प्र.)।

स्वागत समिति :- सज्जन राठी, प्रदीप कुमार, अशोक आर्य, जयपाल आर्य, डॉ. पवन आर्य, अजयपाल आर्य, हरपाल आर्य, प्रवीण आर्य, आजाद सिंह, रामबीर योगाचार्य, ऋषिराज शास्त्री, विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. श्यामदेव, सत्यव्रत शास्त्री, धर्मदेव शास्त्री, दलबीर आर्य (मुकलान), देवेन्द्र सैनी, सत्य प्रकाश आर्य, जयवीर सोनी (हिसार), इन्द्रपाल आर्य, जगदीश सींवर, भीष्म शास्त्री (सिरसा), सुनील शास्त्री, डॉ. राजबीर आर्य, बंसीलाल आर्य, ओम प्रकाश आर्य, शमसेर आर्य (फतेहाबाद), बाबूलाल आर्य, राम अवतार आर्य, अजय शास्त्री, अशोक आर्य, डॉ. एन. पी. गौड़, उमेश आर्य, प्रिं. धूपसिंह आर्य, फूलचन्द आर्य, ओम प्रकाश शास्त्री, दिनेश आर्य (भिवानी), कर्ण सिंह खोस्या, सुशील आर्य, डॉ. चतर सिंह, सतीश आर्य (महेन्द्रगढ़), सुरेन्द्र यादव, रामनिवास गांधी, अशोक आर्य, जय प्रकाश आर्य (रेवाड़ी), हंसराज आर्य, अश्विनी पंडित, स्वामी मुक्तानन्दा, डॉ. नानकचन्द आर्य (गुरुग्राम), नारायण सिंह आर्य, ठाकुरलाल आर्य, सुरेन्द्र आर्य, ब्र. राजदेव आर्य, जय प्रकाश आर्य, चन्द्रपाल आर्य, श्रीचन्द आर्य, यादराम विद्यार्थी (पलवल), प्रेम मित्तल एडवोकेट, जगदीश आर्य, ऋषिपाल आर्य, डॉ. गजराज आर्य, महेश अग्रवाल, कुलभूषण आर्य, बाल किशन शास्त्री, मकेन्द्र आर्य, लाला मेघराज आर्य (फरीदाबाद), बलराम आर्य, राम कुमार आर्य, पवन आर्य, जितेन्द्र आर्य, भगत सिंह, राजेन्द्र सिंह चहल, धर्म प्रकाश दहिया, प्रताप सिंह शास्त्री, कपिलदेव दहिया, मंजीत दहिया, नरेन्द्र सिंह, डॉ. यशपाल आर्य, अमित आर्य, अंकित बांगड़ (सोनीपत), दीपक कथूरिया, नकुल सिंह एडवोकेट (पानीपत), यशवीर शास्त्री, प्रो. आनन्द सिंह (करनाल), डॉ. अतुल यादव, जोगेन्द्र आर्य (कुरुक्षेत्र), विक्रमादित्य एडवोकेट, मोहित कुमार आर्य, प्रितम लाल आर्य (यमुनानगर), सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, मा. श्यामलाल, अमित गुप्ता, सुरेन्द्र पहलवान, महावीर सिंह, सत्यवान मलिक, जगमति मलिक, हरिकेश राविश, प्रीतपाल कालड़ा, किरण पाल आर्य (कैथल), डॉ. राजपाल आर्य, धर्मवीर सरपंच, सूरजमल आर्य, सोनू आर्य, कर्मपाल आर्य, मा. अजीत पाल, जगफूल सिंह ढिल्लों, मनीष (चाँदपुर), विजय कुमार आर्य, नरेश आर्य, अश्वनी आर्य, अनिल आर्य, धूलाराम थुआ, विरेन्द्र लाठर, जसवन्त आर्य, डॉ. बलबीर आर्य, ईश्वर सिंह पौली, कृष्ण नन्दगढ़, कृष्ण चन्द्र आर्य (सफीदों), कर्ण सिंह रेढ़, केवल सिंह जुलानी (जीन्द), डॉ. धर्मवीर आर्य, रमेश कौशिक, जय भगवान आर्य, मा. द्वारकादास, सुभाष आर्य, वीरदेव आर्य, हरिओम एडवोकेट सरपंच, डॉ. परवीन्द्र, प्रदीप सरपंच, अनिल पहलवान, बिजेन्द्र पहलवान, वैद्य रमेश आर्य, वैद्य धर्मपाल खाचरौली (झज्जर), रामचन्द्र पूनिया (दादरी), चन्द्रप्रकाश मलिक, ओम प्रकाश (भिवानी), वेद प्रकाश आर्य (सिंहपुरा कला), विनोद हुड्डा (रोहतक), अर्जुन सिंह (रोहतक), राजवीर आर्य (मोखरा), कर्मवीर आर्य, (खरकड़ा) नफे सिंह आर्य, डॉ. राजेश, देवेन्द्र आर्य (हरफाणा), शेर सिंह शास्त्री (सांघी), जागेराम आर्य (खिडवाली), यज्ञवीर आर्य, रामचन्द्र आर्य (सुंडाना), डॉ. ईश्वर सिंह (खरावड़), डॉ. बलवीर सिंह शास्त्री, महावीर शास्त्री, डॉ. स्वतन्त्रतानन्द शास्त्री (रोहतक), राज कुमार आर्य, राजेन्द्र आर्य, वीरपाल देशवाल, डॉ. रोहताश देशवाल (लाढौत), श्री निवास आर्य, टेकराम आर्य, हनुमन्त सिंह आर्य, मा. प्रताप सिंह आर्य (मकड़ौली), नरेन्द्र हुड्डा (धामड़), भूप सिंह पहलवान (जसिया), इन्द्रजीत राणा, अजमेर शास्त्री (रोहतक), मा. गजनूप पी.टी.आई., प्रिं. महेन्द्र सिंह शास्त्री (रोहतक), वेदपाल शास्त्री (महेन्द्रगढ़), बुद्धराम आर्य (फतेहाबाद), कृष्ण कुमार बब्बर (हांसी), आत्म प्रकाश (उगालन), अनिल सरपंच (कौथ), कर्ण सिंह आर्य (खोखा), सूबे सिंह आर्य (मुकलान), राजेन्द्र मलिक (उमरा), जय प्रकाश कोहरा (भिवानी), कुवंर रमेश आर्य (पलवल), राम कुमार आर्य, डॉ. महावीर सिंह, दयानन्द शास्त्री, वीरेन्द्र शास्त्री, डॉ. धर्मवीर कुण्डू, कृष्ण प्रजापत, जिले सिंह आर्य, जिले सिंह कुण्डू, चौ. सिंहराम कुण्डू, पं. नरेश आर्य, चन्द्रशेखर शास्त्री, बलवान सिंह आर्य, महासिंह, राजेन्द्र सिंह, वीरेन्द्र आर्य, कृष्ण आर्य, तकदीर सिंह आर्य, नरदेव आर्य, प्रोमिला सरपंच, डॉ. नारायण सिंह, जय भगवान, डॉ. महेन्द्र सिंह, दिलबाग सिंह, रामफल आर्य (टिटौली), सन्त कुमार आर्य (लुधियाना), मेजर विजय आर्य, राजकुमार आर्य, सोमदत्त शास्त्री, अशोक आर्य (चण्डीगढ़), हाकम सिंह आर्य, अभिषेक चौहान, दयाकृष्ण काण्डपाल (उत्तराखण्ड), मनोचा खण्डेलवाल, संहसरपाल आर्य, शिव कुमार आर्य, विपिन आर्य, रमाकान्त सारस्वत, अमरजीत आर्य, गुलाब सिंह आर्य, श्रीपाल आर्य (उ. प्र.), सोमदेव शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री, राजवीर शास्त्री, डॉ. वेदवीर शास्त्री, अमित मान (दिल्ली), सन्तोष शास्त्री, रामपाल आर्य (नरेला), राव रघुनाथ सिंह (दिल्ली), संजय सत्यार्थी, अरुण आर्य (बिहार), बिजेन्द्र मलिक, अंकित एडवोकेट, डॉ. अमर सिंह पूनिया (उ. प्र.), वीरपाल आर्य (मुम्बई), जयदेव शर्मा (जयपुर), ओम पहलवान (रोहतक), मनसा राम आर्य (कोलकाता), भंवरलाल आर्य, नारायण सिंह आर्य, चांदमल आर्य, शिवदत्त आर्य, विनोद आर्य, हरदेव सिंह आर्य, रामकृष्ण शास्त्री, जानकी प्रसाद शर्मा, राजेश याज्ञिक, शशि आर्या, सुषमा आर्या, रिंकू आर्या, विकास आर्या, इन्दू आर्या, मुकेश आर्या, सोनिया आर्या, सुमन आर्या, रीमा आर्या, किरण आर्या, मोनिका आर्या, राजकुमारी आर्या, एकता आर्या, पूजा आर्या, मन्जू आर्या, मीनू आर्या, गायत्री आर्या, ज्योति आर्या, पूनम आर्या, निशा आर्या, शिखा आर्या, अंजलि आर्या, किरण आर्या, मनीषा आर्या, प्रीति आर्या, नीलम देवी, रश्मि, कृष्णा देवी, दीप्ति आर्या, विनीता आर्या, ज्योति आर्या, प्राची आर्या, वीरमती आर्या, कल्याणी आर्या, सुनीता आर्या।

-: आयोजक :-

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा

9416630916, 9354840454, 9468165946

आत्मदर्शी दयानन्द

– पं. चमूपति जी एम.ए.

ऋषि दयानन्द का जन्म एक भ्रांति प्रधान युग में हुआ था। कोई ऐसी असम्भव बात न थी जिसे योग की सिद्धि के नाम पर सम्भव न समझा जाता हो। योगियों की विशेषता ही चमत्कार था। धार्मिक नेताओं का गौरव ही उनके अलौकिक कारनामों के कारण था।

धर्म की इस प्रवृत्ति को आर्य समाज ने अन्धविश्वास समझा और इसका घोर खण्डन किया। परिणाम यह हुआ कि आर्य समाज की श्रद्धा विभूति मात्र से उड़ गई। सौभाग्यवश आर्य समाज का अपना ऋषि मूर्त सदाचार था। ऋषि की इस विभूति को आर्य समाज के प्रचारकों ने हाथों हाथ उठा लिया और इसी चमत्कार की कसौटी पर संसार भर के सिद्धों के जीवन परखे जाने लगे। भला इस क्षेत्र में किसी की ताव थी कि दयानन्द से लोहा लेता? दयानन्द का निष्पाप कुन्दन सा जाज्वल्यमान उज्ज्वल चरित्र आर्य समाज का वह अमोध हथियार था जिसके आगे विरोधी चारों खाने चित्त थे। आर्य समाज को अपने मन्तव्यों के गौरव की स्थापना के लिए किसी अलौकिक कारनामे का आश्रय लेना ही नहीं पड़ा।

तो क्या अलौकिक कारनामों की कथाएं वस्तुत: मिथ्या ही है? क्या संसार की सम्पूर्ण घटनाओं के संचालक केवल भौतिक नियम तथा भौतिक शक्तियाँ ही हैं? या क्या आत्मा भी कोई सचमुच की वस्तु है – ऐसी वस्तु जिसके अस्तित्व का संसार के जीवन पर मूर्त अनुभव में आने वाला प्रभाव पड़ता हो?

19वीं शताब्दी के आरम्भ का विज्ञान प्रधान यूरोप आत्मा तथा परमात्मा की सत्ता को ही जवाब दे चुका था। जब विश्वचक्र की सभी घटनाओं का समाधान प्राकृतिक नियमों द्वारा हो जाता है तो अप्राकृतिक सत्ताओं को स्वीकार करने की आवश्यकता ही क्या है? उन दिनों विज्ञान का अर्थ ही प्राकृतिक विज्ञान समझा जाता था। मनोविज्ञान का भी एक ऐसा रूप निकल आया जिसका नाम ही पड़ा मन: शरीर शास्त्र। इसके द्वारा मानसिक घटनाओं की व्याख्या शारीरिक बात तन्तुओं ही की परिभाषा में की जाने लगी। परन्तु विज्ञान का तो काम ही गवेषणा करना है। मानव जीवन का मानसिक पहलु वैज्ञानिक अन्वेषणा के लिए एक विशेष क्षेत्र पेश करता है। इस क्षेत्र की साधारण घटनाओं की व्याख्या भी भौतिक नियमों द्वारा करनी असम्भव है। परन्तु साधारण घटनायें फिर साधारण थीं, इनकी ओर अन्वेषण कर्त्ताओं का विशेष ध्यान क्यों जाता? आंख देखती क्यों है? जिन भौतिक अंशों के संयोग से यह बनी है उन्हें कोई रासायनिक अब मिला देखे। एक कृत्रिम चक्षु बन जायेगा, परन्तु वह देख नहीं सकेगा। भूख का रूप भौतिक भोजनाभाव के अतिरिक्त एक विशेष प्रकार की मानसिक वेदना का है। उसकी भौतिक व्याख्या करना असम्भव है। अन्वेषणकर्त्ता आश्चर्य चकित तब हुए जब सैकड़ों मील की दूरी पर हो रही घटनाओं का साक्षात्कार कई मनुष्यों ने इस प्रकार किया मानो वे घटनायें उनकी आंखों के सामने हो रही हैं। बरसों बाद होने वाली बात इसी वर्तमान क्षण में मूर्त होकर दृष्टि के सामने आ गई। एक हृदय में उद्‌बुद्ध हो रही भावना, दूसरे हृदय में झट संचारित हो गई। विचार का संचार बिना किसी भौतिक बिजली के तार के किया गया। इन विचित्र कार्यों की भौतिक व्याख्या क्या हो सकती थी?

आज विज्ञान किसी अप्राकृतिक सत्ता के होने का विरोध नहीं करता और यद्यपि सदाचार का पक्का भौतिक आधार किसी अलौकिक सत्ता की अनुभूति ही हो सकती है – बिना आध्यात्मिक सदाचार युक्ति के क्षेत्र में ठहर ही नहीं सकता तो भी सदाचार के नियमों का क्रियात्मक पालन बिना इस अनुभूति के भी भली प्रकार होता रहा है। मानव समाज के कई अद्वितीय सेवक नास्तिक कट्टर निरीश्वरवादी हुए हैं।

यह सच है कि बिना सदाचार के धर्म का कोई रूप ही नहीं बनता। किसी पुरुष में आध्यात्मिक विभूतियाँ चाहे कितनी भी स्पष्ट क्यों न हों, यदि उसके आचार पर उन विभूतियों का कोई विशेष रंग नहीं चढ़ा तो धर्म के क्षेत्र में वह पुरुष पांव नहीं रख रहा, किन्तु दुलत्ति चलाने की चेष्टा मात्र ही कर रहा है। आध्यात्मिक अनुभूति की पूर्ण परिणति सन्त स्वभाव युक्त सदाचार में ही है। इसी सन्त स्वभाव को आधुनिक मनोवैज्ञानिक धर्म कहते हैं। सदाचार ही धर्म का बाह्य अंग है, परन्तु इसमें आन्तरिक मधुरता अलौकिक संजीवनी का सा रस आध्यात्मिक भावना से ही आता है।

ऋषि दयानन्द में सदाचार की पराकाष्ठा है, परन्तु क्या उनके इस सदाचार का आधार कोई आध्यात्मिक अनुभूति थी। वे तर्क के पुतले थे, परन्तु क्या वह तर्क नीरस था? या उसमें रसपूर्ण भावना का भी एक प्रबल पुट था? तर्क ने उनकी भक्ति को आंख मीच कर 'बाबा वाक्यं प्रमाणम्' की प्रवृत्ति के दूर ही दूर रखा, परन्तु उनके महत्त्व की इतिश्री इसी में हो जाती है कि उन्हें तर्क के क्षेत्र में धोखा नहीं दिया जा सकता था।

'साक्षात् कृत धर्माण ऋषयोबभूव:' – यास्क की इस उक्ति के अनुसार ऋषि कहते ही उस पुरुष को हैं जिसने धर्म का अर्थात् उस शक्ति का जो समस्त सत् पदार्थों को धारण करती है, साक्षात्कार किया हो। भौतिक संसार की आधारभूत एक आध्यात्मिक सत्ता है। सदाचार का वास्तविक मूल यही है। ऋषि अपने आध्यात्मिक नेत्रों से उसका दर्शन करता है। इसी में उसका ऋषित्व है। दूसरे शब्दों में हमारे प्रश्न का एक और रूप यह हो जायेगा कि क्या स्वामी दयानन्द ऋषि थे?

इस प्रश्न का उत्तर किसी और की साक्षी से दे सकना असम्भव है। सन्तों के जीवन में कुछ ऐसे बाह्यगुण भी पाये जाते हैं, जिनसे वे प्राणिमात्र को अपनी ओर खींच लेते हैं। इनसे उनका आत्म साक्षात्कार प्रमाणित होता है, परन्तु बाह्य लक्षण फिर भी बाहर की ही वस्तु है। उसके सम्बन्ध में भ्रांति हो सकती है। अपने आन्तरिक अनुभव का अन्तिम गवाह तो प्रत्येक पुरुष अपने आप ही हो सकता है। विभु परमेश्वर का सम्बन्ध प्रत्येक आत्मा से उसके हृदय की गुफा में ही होता है। वेदों तथा उपनिषदों में इन आध्यात्मिक अनुभूतियों के मुंह बोलते चित्र मिलते हैं, यद्यपि किसी उपनिषद्‌कार ने अपने वैयक्तिक अनुभव का वर्णन अपने नाम के साथ जोड़कर नहीं किया। फिर वेद तो हैं ही वेद, उनमें नामों का क्या काम?

यद्यपि ऋषि दयानन्द ने भी इस विषय में मौनावलम्बन किये रहने की प्राचीन ऋषियों की शैली का पूर्णतया अनुसरण किया है तो भी कई

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्थानों पर उनकी आध्यात्मिक अनुभूति की अनायास झांकी सी मिल जाती है। हम नीचे कतिपय उक्तियों और घटनाओं का उल्लेख करेंगे, जिनमें ऋषि के जीवन के इस पहलु पर प्रकाश पड़ सके।

ऋषि दयानन्द के योग प्रत्यक्ष का पहला उल्लेख उनकी आत्मकथा ही में मिलता है। ऋषि लिखते हैं –

फिर एक मास के पश्चात् मैं भी उनकी आज्ञा के अनुसार दूधेश्वर महादेव के मन्दिर में उनसे जाकर मिला। वहाँ उन्होंने योगविद्या के अन्तिम रहस्य और उसकी प्राप्ति की विधि बताने की प्रतिज्ञा की थी सो उन्होंने भी अपना वचन पूरा किया और कथनानुसार मुझको भी निहाल कर दिया।

ऋषि ने भौतिक क्षेत्र में भी प्रत्यक्ष ही की साक्षी का अवलम्बन किया था। यह बात उनके अपने हाथ से शवछेदन की क्रिया करने से प्रकट होती है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी उनकी यही अवस्था थी। सुनी सुनाई पर विश्वास कर लेना उनकी प्रकृत्ति के सर्वथा प्रतिकूल था। उनके एक पत्र में नीचे लिखी सारगर्भित उक्ति ध्यान देने योग्य है –

बहूनामार्याणां वेदशास्त्र बोध समाधि योग विचाराभ्याम्।

जीव स्वरूप ज्ञानं बभूव भवति भविष्यति वेति।।

(ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन भा. 1 पृ. 57)

इस वाक्य में भवति शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं।

कुछ समय महर्षि केवल समाधि ही का आनन्द लेते रहे थे। तत्पश्चात् वे देश-सुधार का कार्य करने लगे। वे लिखते हैं –

हमने केवल परमार्थ और स्वदेशोन्नति के कारण समाधि और ब्रह्मानन्द को छोड़कर यह कार्य ग्रहण किया है।

(पत्र और विज्ञापन भाग 4 पृ. 18)

आर्याभिविनय में ऋषि दयानन्द के हृदय के आन्तरिक उद्‌गार प्रकट हुए हैं। परमेश्वर को सम्बोधित कर कहते हैं :-

'हम से अलग आप कभी मत हों।' (पृ. 110)

'आप (स्वमुख) स्वशक्ति से सब जीवों के हृदय में सत्योपदेश नित्य ही कर रहे हों। (पृ. 87)

'आम साम को सदा गाते हो, वैसे ही हमारे हृदय में सब विद्या का प्रकाशित गान करो। (पृ. 118)

जैसे सूर्य की किरण, विद्वानों का मन और गाय, पशु अपने-अपने विषय और घासादि में रमण करते हैं व जैसे मनुष्य अपने घर में रमण करता है वैसे ही आप स्वप्रकाश युक्त हमारे हृदय (आत्मा) में रमण कीजिए। (पृ. 84)

परमेश्वर से ऋषि दयानन्द का सम्बन्ध साक्षात् था। वे सदा उसे अपने अंग-संग पाते थे और उससे अलग न होने का आग्रह करते थे। प्रभु के मधुर आलाप को सुनते थे और उसके अति रमणीय रमण का आनन्द लेते-लेते स्वयं भी उसी में रत हो जाते थे।

इस सम्बन्ध के परिणामस्वरूप कुछ विशेष मानसिक शक्तियाँ योगी को अनायास प्राप्त हो जाती हैं। उन्हें सिद्धि कहा जाता है। योगी इन शक्तियों की आकांक्षा नहीं करता। उनमें आसक्त हो जाने से समाधि के रास्ते में बाधा खड़ी हो जाने की सम्भावना है। ऋषि अपने विषय में लिखते हैं :-

मैं इन तमाशों की बातों को देखना दिखलाना उचित नहीं समझता। चाहे वे हाथ की चालाकियों से हों, चाहे योग की रीति से हों किन्तु कोई चाहे तो उसको योग की रीति सिखला सकता हूँ कि जिसके अनुष्ठान करने से वह स्वयं सिद्धि को प्राप्त हो जाये। (पत्र और विज्ञापन भाग-1)

एक और स्थान पर लिखा है – देखो पूर्वकाल में हमारे ऋषि मुनियों को कैसी पदार्थ विद्या आती थी कि जिससे आत्मा के बल से सब अन्त:करण के भेद को शीघ्र ही जान लिया करते थे – भीतर के पदार्थों के योग से योगी लोग अनेक अद्‌भुत कर्म कर सकते थे। (पत्र और विज्ञापन भाग-2 पृष्ठ-20)

इन दो उद्धरणों को मिलाने से स्पष्ट हो जायेगा कि ऋषि दयानन्द जब किसी मानसिक तथ्य का वर्णन सामान्य संज्ञा द्वारा ऋषियों की सम्पूर्ण श्रेणी के विषय में करते हैं तो वह तथ्य उनका अपना अनुभूत होता है। जीवन स्वरूप ज्ञान के सम्बन्ध में जो एक संस्कृत वाक्य ऊपर उद्‌धृत किया गया है उसका निर्देश ऋषि को अपनी ओर होने में अब कोई सन्देह नहीं रहेगा।

ऋषि दयानन्द को दूर देश तथा भविष्य काल की घटनाओं का साक्षात्कार हो जाने के अनेक उदाहरण उनके जीवन चरित्र में मिलते हैं। ऋषि ने एक नवयुवक को एक विशेष अवधि तक विवाह करने से रोक दिया था। अवधि के समाप्त होते ही उसका देहान्त हो गया। ऋषि की योग दृष्टि ने एक आर्य बाला को उम्रभर के वैधव्य से बाल-बाल बचा लिया। एक भक्त दूध लाया? ऋषि ने पूछा क्या रास्ते में सांप देखा था? वह आश्चर्यचकित था – ऋषि को इस घटना का ज्ञान कैसे हुआ इत्यादि।

आध्यात्मिक अनुभूति का एक फल यह भी होता है कि जब वह अनुभूति किसी को प्राप्त हो जाती है तो लोगों के हृदय में उसके लिए अनायास भक्ति का भाव उमड़ने लगता है। यह बात यहाँ तक पहुँचती है कि भक्त जन जब कभी आंखे मीचते हैं उनके सामने गुरुदेव का चित्र सा आ जाता है और वे चाहते हैं कि गुरुदेव हमेशा उनके अंगसंग रहें। गुरु से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक वस्तु में भी एक विशेष भक्ति का भाव पैदा हो जाता है। ऋषि दयानन्द के जीवन में यह बात जगह-जगह पर उल्लेखित है हम केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करेंगे –

ऋषि की सेवा में ईश्वरानन्द सरस्वती का एक पत्र मिलता है जिसमें लिखा है –

मेरे पर भगवद्‌चरणों की धूरी स्वप्न में वरसी है सो मैंने खूब स्नान किया। (पत्र व्यवहार पृ.-20)

जोशी लाल जी, कल्याण जी एक पत्र में लिखते हैं –

आपके हस्ताक्षर कुं. बोहोत प्रेम में दण्डवत किया। (पत्र व्यवहार प्र. 295)

ऋषि के प्रति राजस्थान के राजाओं, उच्च अधिकारियों तथा सर्वसाधारण यहाँ तक कि एक पाप-ताप से सन्तप्त दुखिया देवी के भाव अत्यन्त भक्तिपूर्ण थे। यह बात मैं ऋषि के पत्र व्यवहार ही की साक्षी से ''आर्य'' की किसी पूर्व संख्या में सिद्ध कर चुका हूँ।

मेरे इस लेख का प्रयोजन केवल यह दिखाना है कि ऋषि दयानन्द सचमुच ऋषि थे, उन्होंने आध्यात्मिक अनुभूति तथा उससे सम्बन्ध रखने वाली सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। उसी अनुभूति का चमत्कार उनका निष्कलंक सच्चरित्र सम्पन्न जीवन था। उनकी सर्वस्व स्वाहा करने वाली असीम परोपकार की प्रवृत्ति, उनके प्राणिमात्र के लिए उन्नत दयाभाव, उनका जगत के उद्धारार्थ अनथक अविरल परिश्रम, आपत्तियों की उमड़ रही बाढ़ के सामने उनका अदम्य अटल धैर्य, अपने उद्‌देश्य की सफलता में उनका निरपेक्ष विश्वास, ये सब उसी एक अनुभूति के परिणाम थे।

ऋषि ब्रह्म का ध्यान करते-करते ब्रह्ममय हो गये थे। उनसे ब्रह्म अलग न था। वे ब्रह्म में रम रहे थे, और ब्रह्म उनमें। कहने को तो उन्होंने ब्रह्मानन्द को छोड़कर परोपकार का कार्य आरम्भ किया था, परन्तु ब्रह्मानन्द ने एक क्षण भी उनका पल्ला नहीं छोड़ा।

किसी भक्त के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने स्वयं भी तो यही कहा था कि यह महान कार्य मैं बिना किसी योग के सिद्धि के नहीं कर रहा हूँ। ऋषि का योग की सिद्धि उनका आत्मदर्शन था।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं 'राजधर्म' के स्वर्ण जयन्ती समारोह के लिए निमंत्रण एवं अपील

आर्य महानुभावों! युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना संसार का उपकार करने के लिए की थी। आर्य समाज की स्थापना को 143 वर्ष हो चुके हैं। देश–विदेश में फैले हजारों आर्य समाज की इकाईयों एवं संस्थाओं से युक्त आर्य समाज विश्वभर में वैदिक संदेश को फैलाने के लिए कृत–संकल्प है। आर्य समाज के पास धर्मोपदेशकों, भजनीकों, प्रचारकों, वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों की एक सुदृढ़ तीव्रगामी और उत्साही मण्डली है। इसके पास मुद्राणालयों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं की सशक्त प्रेस इकाई भी है। किन्तु इतना सबकुछ होते हुए भी आर्य समाज के संगठन में निष्क्रियता एवं निराशा हम सबके लिए चिन्ता का विषय बनी हुई है। आर्य समाज में युवा पीढ़ी का प्रवेश न के बराबर है। देश में सर्वाधिक जनसंख्या युवावर्ग की होने के बावजूद आर्य समाज में युवक बहुत कम आ रहे हैं। सन् 1967 में युवकों को आर्य समाज में दीक्षित करने के लिए आर्य समाज के महान संन्यासी युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में 'सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्' का गठन किया गया था तथा इसके शंखनाद के रूप में 'राजधर्म' नाम से पत्रिका का प्रकाशन भी शुरू किया गया था। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के आह्वान पर हजारों आर्य युवकों ने आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए आर्य समाज में प्रवेश भी किया। परिषद् के इस प्रयास से आर्य समाज में युवक क्रांति अभियान का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ जो आर्य समाज के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर हमने निश्चय किया है कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् तथा राजधर्म की 'स्वर्ण जयन्ती' का समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया जाये। इस समारोह में जहाँ पिछले 50 वर्ष की गतिविधियों एवं उपलब्धियों का लेखा–जोखा आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा वहीं तेजस्वी भावी कार्यक्रम की घोषणा भी की जायेगी। समारोह में जहाँ परिषद् की गतिविधियों की शानदार चित्र प्रदर्शनी लगेगी वहीं एक डाक्यूमेंटरी फिल्म भी तैयार की जायेगी। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् आर्य समाज का एक सशक्त युवा संगठन है तथा 'राजधर्म' पत्रिका आर्य राष्ट्र निर्माण का प्रबल प्रवक्ता एवं शंखनाद है। इन दोनों के स्वर्ण जयन्ती समारोह में देशभर से हजारों युवक एवं युवतियाँ एकत्रित होकर संकल्प लेंगे तथा आर्य समाज में नई पीढ़ी को सम्मिलित करने तथा निराशा के बादलों को चीरकर सक्रियता लाने के लिए एक नया युवक क्रांति अभियान प्रारम्भ करने की घोषणा करेंगे। हमारा प्रयास है कि कम से कम 50 युवक एवु युवतियाँ इस कार्य के लिए जीवन लगाने का संकल्प लेवें। समारोह में परिषद् के समस्त विशिष्ट सहयोगियों, जीवनदानी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों एवं सम्पादकों को प्रशस्ति पत्र के साथ सम्मानित किया जायेगा। किसी भी संस्था या व्यक्ति के जीवन में 50 वर्ष का समय बहुत महत्त्व रखता है। अतः इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में हम आपकी भागीदारी चाहते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने अन्य सभी आवश्यक कार्य छोड़कर समारोह में पधारें तथा इस युवक क्रांति अभियान के साक्षी बनें। यह आयोजन परिषद् के संस्थापक एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी की स्मृति में निर्मित स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा में 9 व 10 मार्च, 2019 को भव्य तरीके से होने जा रहा है। 27 फरवरी, 2019 से चतुर्वेद पारायण महायज्ञ प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति 9 मार्च, 2019 को प्रातः 9 बजे होगी। 10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती समारोह का मुख्य आयोजन प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक होगा। आप सभी अभी से समारोह में आने की तैयारी शुरू कर दें और हमें अग्रिम सूचना देकर अवगत करायें कि आप कब और कितने साथियों के साथ पधार रहे हैं, ताकि आपके आवास एवं भोजन आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। हमें पूरा विश्वास है कि आप सपरिवार एवं दल–बल सहित पधारकर समारोह को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। इस विशाल आयोजन की विविध व्यवस्थाओं पर लाखों रुपये का व्यय होगा। आप अपने सामर्थ्य एवं सुविधा अनुसार आर्थिक सहयोग देकर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे। इस आशा और विश्वास के साथ निवेदन है कि आप अपना सहयोग 'स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन' के नाम से चैक/बैंक ड्राफ्ट/नकद देकर कर सकते हैं।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
प्रधान

बिरजानन्द
महामंत्री

स्वर्ण जयन्ती समारोह

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

9416630916, 9354840454, 9468165946

वैदिक धर्म और संस्कृति

– डॉ. देवबाला

धर्म और संस्कृति के विषय में विद्वज्जन विचार-विमर्श करते रहे हैं, और इस सम्बन्ध में विभिन्न धारणा प्रचलित हैं। उन धारणाओं पर प्रश्न भी उपस्थित होते हैं। एक प्रश्न यह है कि धर्म की आवश्यकता क्या है? क्या धर्म के बिना मनुष्य जीवित नहीं रह सकता? या उसका जीवन सुख पूर्वक नहीं बीत सकता? मान लीजिए, धरती पर हिन्दुइज्म, इस्लाम, क्रिश्चियनिटी, जुडाइज्म वगैरह मत, पन्थ न हों तो क्या मनुष्य का जीवन नहीं चलेगा? इतने सारे धर्म हैं इनमें कौन से ठीक हैं क्या सभी ठीक हैं? क्या सभी समान रूप से ठीक हैं? या सभी ठीक हैं पर कोई एक ज्यादा ठीक हैं? या एक ही ठीक है। या सब गलत हैं? या सभी थोड़ा-थोड़ा ठीक हैं और थोड़ा थोड़ा गलत हैं? धार्मिक होने की पहचान क्या है? धर्म क्या किसी पहचान से बंधा हुआ है? यदि धर्म सुख पहुंचाने के लिए हैं तो धार्मिक समुदायों के लोग इतना लड़ते क्यों रहते हैं? धर्म के कारण इतना खून क्यों बहाया जाता है? धर्म का जो उद्देश्य बताया जाता है धर्म उसे पूरा करने में बुरी तरह असफल नहीं हुआ है।

आइये इन प्रश्नों पर निष्पक्ष और तर्क पूर्वक विचार करते हैं। पहली बात धर्म की आवश्यकता क्या है? यह एक विचित्र प्रश्न है। हमारे जिन प्राचीन मनीषियों ने धर्म के विषय में बहुत सूक्ष्म तथा गहन चिन्तन किया, उन्होंने इस बात की तो परीक्षा की कि धर्म क्या है? धर्म का स्वरूप क्या है? किन्तु कहीं पर भी यह प्रश्न नहीं उठाया गया कि धर्म की आवश्यकता क्या है? किन्तु एक दूसरे ढंग से उत्तर मिल जाता है, भले ही यह प्रश्न न उठाया गया हो। उत्तर दिया है धर्म शब्द की व्याख्या में ''धारणाद् धर्म इत्याहु'' धर्म शब्द के अन्दर अर्थ है, जो धारण करे वह धर्म है, जिसने धारण किया हुआ है, जिसके होने से आधृत है। जिसके न होने से अस्तित्व का आधार ही समाप्त हो जायेगा, वह धर्म है। जिसका जो धर्म है, उसको हटा देने से, अस्तित्व ही नहीं रहेगा। तो जरा सोचिये, हिन्दुइज्म, इस्लाम, क्रिश्चियनिटि आदि को हटा देने से क्या मनुष्य समाज समाप्त हो जायेगा। स्पष्ट और निर्विवाद उत्तर है – नहीं! तो फिर वह क्या है, जिसके न होने से मनुष्य समाज नहीं रहेगा, या कहें कि मनुष्य, मनुष्य नहीं रहेगा। वह है मनुष्यता मानवता के वे नियम जिनको अपनाये बिना मनुष्य, मनुष्य नहीं बनता और जिन नियमों को धारण किये बिना मनुष्य समाज भी नहीं रह सकता। वे नैतिकता के नियम कहे जाते हैं, उनको हटा दीजिए तो मनुष्य समाज भी समाप्त हो जायेगा। मनुष्यता या नैतिकता के जितने भी नियम हैं, उनको हटा दीजिए तो मनुष्य समाज भी समाप्त हो जायेगा।

मनुष्यता या नैतिकता के जितने भी नियम हैं वे इस्लाम, क्रिश्चियनिटी या हिन्दुइज्म के नहीं हैं, वे सबके हैं, इसलिए सभी धार्मिक समुदायों के धर्म ग्रन्थों में इन नियमों का उपदेश बिना किसी मतभेद के किया गया है तथा इन नियमों का पालन करने पर पूरा बल दिया गया है। जैसे झूठ न बोलना, चोरी न करना, दूसरों को अकारण दुःख न देना आदि। पाप और पुण्य की परिभाषा ही सब धर्मों में यही है। दूसरों को दुःख देना पाप है, सुख पहुंचाना पुण्य है। नैतिकता के जितने भी नियम हैं और हो सकते हैं उन सबका आधार भूत नियम एक ही है और वही वास्तविक धर्म है। धर्म को इतने सुन्दर, संतुलित ढंग से महर्षि वेदव्यास ने परिभाषित किया है कि उससे कोई भी व्यक्ति, चाहे किसी भी धार्मिक समुदाय का हो, असहमत नहीं हो सकता। महर्षि वेदव्यास कहते हैं।

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चैवाव धार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।''

अर्थात् धर्म का सर्वस्व सुनो और सुनकर धारण करो, जैसा व्यवहार तुम अपने साथ किया जाना पसन्द नहीं करते, वैसा व्यवहार दूसरों के साथ मत करो। धर्म की यह परिभाषा सार्वकालिक है और कोई भी इसका विरोध नहीं कर सकता। इन नियमों को आप परिवार से व्यापार से, समाज से, सम्बन्धों से हटाकर देखिये तो आप पायेंगे कि सब कुछ बिखर गया कोई सम्बन्ध नहीं बचा। यही वह धर्म है, जिसने धारण किया हुआ है। इसलिए, हिन्दु, मुसलमान, ईसाई आदि सम्प्रदाय हैं, धर्म एक ही है, जिसका उपदेश प्राचीन वेदादि शास्त्रों ने किया है। इसलिए सभी धर्म ठीक हैं या गलत, यह प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि मूलतः धर्म एक ही है। धार्मिक सम्प्रदायों के कारण धरती पर युद्ध और अशांति है, धर्म के कारण नहीं। धर्म अपने उद्देश्य में इसलिए असफल हुआ है क्योंकि सम्प्रदायों ने धर्म की जगह ले ली और धर्म को अपदस्थ कर दिया।

वैदिक धर्म और संस्कृति के द्वारा ही मानवता का कल्याण सम्भव है। संस्कृति सभ्यता से भिन्न है। सभ्यता बदलती रहती है। खान-पान, रहन-सहन, पहनावा आदि सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं, सभ्यता भारतीय, चाइनीज, जापानी, अमेरिकन हो सकती है, किन्तु संस्कृति अलग-अलग नहीं होगी। संस्कृति भी पूरी मनुष्यता की एक ही होगी ''सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा'' यह वेद का वाक्य है। सर्वप्रथम संस्कृति शब्द वेद में प्रयुक्त हुआ है। संस्कृति का अर्थ है, विद्या और सुशिक्षा से उपजा हुआ नीतियुक्त व्यवहार। यह संस्कृति ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। महर्षि दयानन्द का कथन है कि ''मनुष्य उसी को कहना जो स्वात्मवत्'' अपनी तरह ही दूसरों के दुःख, सुख को अनुभव करे। जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरों को दुःख दे, वह पशुओं का बड़ा भाई है। संस्कृति मनुष्य को मनुष्य बनायेगी, धर्म उसे ऊँचाइयाँ देगा, उदात्त स्तर तक ले जायेगा।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना का वार्षिक महोत्सव मेले के रूप में सम्पन्न

एवं बौद्धिक रूप से तपस्वी बन जाते हैं। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली जिसे लार्ड मैकाले ने शुरू किया था अधूरी है, क्योंकि इसमें नैतिक शिक्षा एवं संस्कारों की शिक्षा का पूर्णतया अभाव है। इस अवसर पर गुरुकुल के संरक्षक डॉ. पूर्ण सिंह डबास तथा डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

सायं 3 बजे से 6 बजे तक खरियार रोड नगर के बीचोबीच शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। यह शोभा यात्रा दो दिन पूर्व कश्मीर के पुलवामा जिले में आतंकवादियों द्वारा सी.आर.पी. के 40 जवानों को शहीद कर दिये जाने के विरोध में मौन यात्रा के रूप में निकाली गई। शोभा यात्रा के आगे–आगे देश के इन वीरगति को प्राप्त शहीद सैनिकों की स्मृति में तथा उनके परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए सभी वरिष्ठ संन्यासी एवं विद्वान् हजारों आर्यजन एवं गुरुकुल के छात्र एवं छात्राएँ मौन चल रहे थे। इस शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी व स्वामी व्रतानन्द जी कर रहे थे। उनके साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, डॉ. सोमदेव शास्त्री, आर्य समाज साकेत के पूर्व प्रधान डॉ. पूर्ण सिंह डबास, आर्य समाज आदर्श नगर, जयपुर के धर्माचार्य पं. जानकी प्रसाद शर्मा, आर्य समाज सांताक्रूज मुम्बई के आचार्य पं. नामदेव, आचार्य वीरेन्द्र मंत्री गुरुकुल न्यास, श्री घनश्याम अग्रवाल उपप्रधान व श्री तेजूराम उपमंत्री, कन्या गुरुकुल की आचार्या सुश्री पुष्पा वेदश्री, श्री सदानन्द साहू सरपंच, श्री राजेन्द्र धनखड़ रायपुर, ब्र. कोमल कुमार, आचार्य गुरुकुल कोसरंगी, स्वामी सोम्यानन्द, पं. सुरेन्द्र पाल आर्य, डॉ. रामस्वरूप सिसोदिया, डॉ. कुंजदेव मनीषी, श्री विनय कुमार नैष्ठिक, श्री राकेश कुमार नैष्ठिक, ब्र. गजाधर नैष्ठिक, ब्र. बैकुण्ठ नैष्ठिक, ब्र. वरूण नैष्ठिक, श्री महेन्द्र जी, आचार्य सुरेश जी आदि भी शोभा यात्रा में सम्मिलित थे। आचार्य प्रवीण कुमार, आचार्य निरंजन शास्त्री, आचार्य सुनील शास्त्री, आचार्य जितेन्द्र शास्त्री आदि ने शोभा यात्रा का कुशल संयोजन किया।

रात्रि में 8 से 10 बजे तक गुरुकुल सम्मेलन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री विनय आर्य ने की तथा मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे। इस सम्मेलन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों ने विभिन्न प्रभावशाली प्रस्तुतियाँ देकर श्रोताओं तथा दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। अपने संक्षिप्त संबोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी की गुरुभक्ति पर प्रभावशाली विचार प्रस्तुत किये। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री विनय आर्य ने आर्य समाज की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

17 फरवरी को प्रातः 7 से 9 बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री नन्द कुमार आर्य के भजन तथा स्वामी आर्यवेश जी का संक्षिप्त प्रवचन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने ईश्वर की उपासना पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। प्रातः 10 बजे से 2 बजे तक अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह किया गया। इस समारोह में रायपुर के विधायक श्री विकास उपाध्याय, परममित्र मानव निर्माण संस्थान रोहतक की ओर से श्री व्रतपाल सिन्धु, भुवनेश्वर से इं. प्रियव्रत दास विशेष रूप से उपस्थित थे। सम्मान समारोह का संयोजन आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने किया। परम मित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से सर्वश्री पं. नामदेव शास्त्री–मुम्बई, पं. जानकारी प्रसाद शर्मा–जयपुर एवं पं. विशिकेशन शास्त्री –उड़ीसा को शॉल, श्रीफल एवं 21–21 हजार रुपये की राशि देकर सम्मानित किया गया। सम्मान के इसी क्रम में सम्मान समारोह के अध्यक्ष इं. प्रियव्रत दास, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. सोमदेव शास्त्री, सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का भी स्वागत किया गया। उड़ीसा के ग्रामीण अंचलों में वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में निष्ठा के साथ कार्य करने वाले 6 उपदेशकों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह को आचार्य सोमदेव शास्त्री प्रियव्रत दास इंजीनियर एवं विकास उपाध्याय विधायक ने सम्बोधित किया। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने आशीर्वचन देकर कार्यक्रम का समापन किया।

सायं 3 से 6 बजे तक व्यायाम सम्मेलन श्री अमर सिंह सहारन की अध्यक्षता में किया गया। सम्मेलन का संयोजन आचार्य निरंजन शास्त्री तथा निर्देशन श्री कुंजदेव मनीषी ने किया। इस सम्मेलन में ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ने अत्यन्त प्रभावशाली कार्यक्रम प्रस्तुत करके दर्शकों को आश्चर्य चकित कर दिया।

रात्रि 7 से 10 बजे तक आचार्य मनुदेव, आचार्या पुष्पांजलि के संयोजन में शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये जिसमें गुरुकुल के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया।

18 फरवरी को प्रातः 7 से 10 बजे तक सामवेद पारायण यज्ञ की पुर्णाहुति की गई। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने यज्ञवेदी पर गुरुकुल के समस्त अध्यापकों व अध्यापिकाओं तथा नैष्ठिकों को आमंत्रित करके संकल्प की आहुति दिलवाई तथा उन्हें प्रेरित किया कि वे गुरुकुल के कार्यों को अत्यन्त पुरुषार्थ तथा मनोयोग से किया करेंगे। आचार्य सोमदेव जी ने सभी यजमानों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ भी प्रदान की। उन्होंने परमपिता परमात्मा एवं स्वामी धर्मानन्द जी का धन्यवाद किया कि सामवेद पारायण यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो गया।

इस अवसर पर पं. सुरेन्द्र पाल आर्य ने गुरुकुल के इतिहास पर एक भावनापूर्ण कविता सुनाकर पूरे वातावरण को भावुकता से ओत–प्रोत कर दिया। यज्ञ के उपरान्त समापन समारोह मुख्य पण्डाल में प्रारम्भ हुआ जिसमें स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन सुनने को मिला। स्वामी जी ने गुरुकुल आश्रम आमसेना तथा उससे सम्बन्धित सभी शाखा गुरुकुलों के माध्यम से गरीब एवं आदिवासी समाज की जो सेवा हो रही है उसे एक ऐतिहासिक कार्य बताते हुए स्वामी धर्मानन्द जी तथा उनके समस्त शिष्यों एवं सहयोगियों का साधुवाद किया। इस अवसर पर सभी कर्मठ कार्यकर्ताओं, पत्रकारों व वार्षिक महोत्सव में किसी भी रूप में सहयोग देने वाले सहयोगियों को मंच पर आमंत्रित करके सम्मानित किया गया तथा स्वामी धर्मानन्द जी ने सभी को आशीर्वाद भी प्रदान किया।

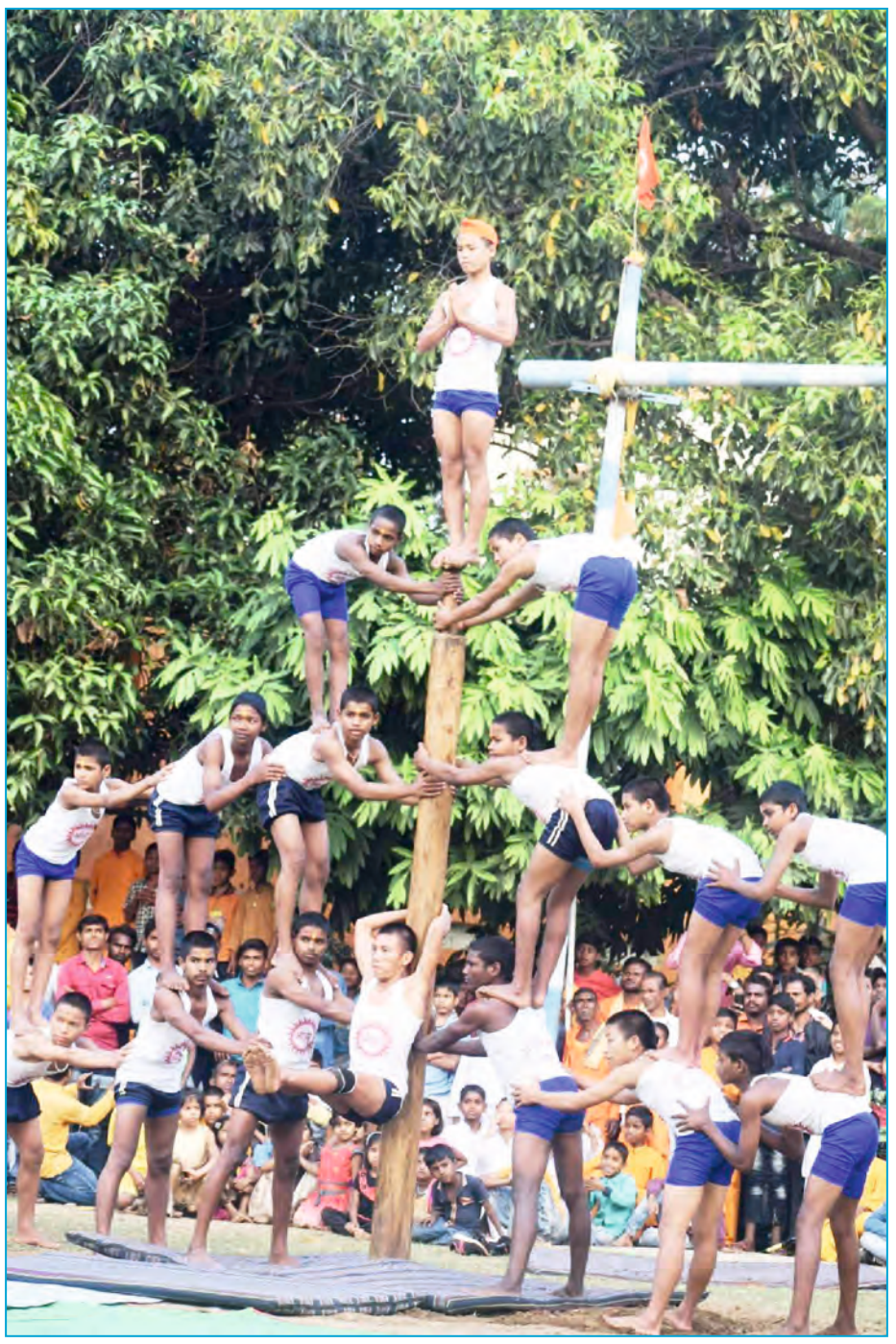

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की विशेषता यह भी रही कि सुदूर न्यूजीलैण्ड से विशेष रूप से श्री प्रकाश राय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजू राय तथा उनके बड़े भ्राता श्री नरेन्द्र राय इस समारोह में विशेष रूप से पधारे तथा तीनों दिन महोत्सव में सम्मिलित रहे। हरियाणा, दिल्ली, छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे हुए गुरुकुल के सहयोगियों ने आर्थिक सहयोग देकर समारोह की व्यवस्था में अपना योगदान प्रदान किया। कार्यक्रम अत्यन्त रोचक, प्रभावशाली एवं सार्थक रहा। विशेष रूप से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं ब्रह्मचारिणियों द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से किया जिसकी सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की और उन्हें पारितोषिक देकर उत्साहित भी किया। इस महोत्सव में पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती का संरक्षण एवं आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी की देखरेख में गुरुकुल के समस्त अध्यापकों/अध्यापिकाओं एवं विभिन्न गुरुकुलों से पधारे हुए आचार्यों तथा उनके ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों ने कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की। मुख्य रूप से डॉ. कुंजदेव मनीषी, आचार्य मनुदेव वाग्मी, आचार्या पुष्पांजलि ने दिन रात मेहनत करके विशेष कर्मठता का परिचय दिया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।